जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

गुण-दोष का निर्णय तो विवेक ही करता है, अतः श्रद्धा विवेकपूर्वक हो तभी सार्थक व शुभफलदायी होती है। भाव-भासन बिना जो श्रद्धा होगी, वह अंधी ही होगी।
ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ : 81

वर्ष : 27, अंक : 23 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में -

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली : आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश एवं पुण्य प्रभावना योग से निर्मित भव्य एवं विशाल अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में विराजित जिनबिम्बों की मंगल प्रतिष्ठा विधि श्री 1008 आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के माध्यम से 7 से 13 फरवरी,05 तक शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार अनेकानेक आयोजनों सहित हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द सम्पन्न हुई।

महा महोत्सव में देश-विदेश से पधारे हजारों साधर्मी भाई-बहिनों ने भाग लिया; जिसमें देश के शीर्षस्थ विद्वानों के प्रवचनों का धर्मलाभ प्राप्त हुआ। महोत्सव का प्रारंभ श्री सुरेन्द्र जैन अशोक जैन परिवार राजपुर रोड दिल्ली के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। यहाँ पाषाण, धातु एवं स्फटिक के मिलाकर कुल 34 जिनबिम्बों की स्थापना की गई।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रकाशदादा ज्योतिर्विद मैनपुरी, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं डॉ. सुदीप जैन के प्रवचनों का लाभ समस्त आत्मार्थियों ने लिया।

बच्चों की कक्षा लेने हेतु बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञ डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, मुम्बई विशेषरूप से पधारीं।

इस अवसर पर आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 116 वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष में 116 धातु ध्वजाओं की स्थापना, 1008 कलशों द्वारा पाण्डुक शिला पर बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक, देश के सुप्रसिद्ध तत्त्वप्रचार के लिये निर्मित 8 केन्द्रों (1.स्वर्णपुरी सोनगढ़ 2. ज्ञानतीर्थ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर 3. पूज्यश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली 4. श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, सोनागिरि 5. तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ 6. आ.कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर पौन्नूरमलै, कर्नाटक 7. गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन ट्रस्ट सिद्धायतन, द्रोणगिरि 8. चैतन्य धाम, गुजरात) के चित्रों का अनावरण, पाँच विशाल शिखरों पर ध्वज एवं कलश स्थापना के अतिरिक्त 143 लघु शिखरों पर पंचपरमेष्ठी के गुणस्वरूप 143 कलशों की स्थापना, मुख्य मंदिरों में 64-64 चंवरों की स्थापना, विशाल गजरथ यात्रा, डी.पी. कौशिक मुजफ्फरनगर द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन पर आधारित **परिवर्तन** नाटिका एवं सांस्कृतिक मण्डल मण्डलेश्वर द्वारा **सत्पथ की ओर सती अंजना** नाटिका का मंचन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

महोत्सव में भगवान आदिनाथ के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मणिदेवी बाबूलाल जैन विवेक विहार को मिला। सौधर्म इन्द्र एवं शची इन्द्राणी श्री विमलकुमार जैन-श्रीमती कुसुम जैन विवेक विहार तथा कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री अजितप्रसाद जैन-सुशीला जैन राजपुर रोड थे।

इन्द्रसभा की अष्ट देवियों के रूप में छिन्दवाड़ा की बालिकाओं ने तथा राजसभा की अष्ट देवियों के रूप में ज्ञानसुधा मण्डल दाहोद की बालिकाओं ने विशेष योगदान दिया।

दैनिक कार्यक्रमों में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, शांति जाप, जिनेन्द्र अभिषेक पूजन, प्रासंगिक कल्याणक पूजन, इन्द्रसभा एवं राजसभा, भव्य शोभायात्रा, बालकक्षा, देव-शास्त्र-गुरु भक्ति एवं ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य थे।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन एवं प्रतिष्ठाचार्यत्व में ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का 1 लाख, 94 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 21 हजार 110 रुपयों की सी.डी ऑडियो कैसिट्स के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं का भी लाखों रुपयों का सत्साहित्य एवं सी.डी बिके तथा हजारों लोग विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बनें। **- आदीश जैन**

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 6:45 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 09312506419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

25

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

विगत ३८ वीं गाथा में कर्मफल चेतना, कर्मचेतना एवं ज्ञानचेतना के स्वरूप का कथन है साथ ही यह भी बताया था कि वे किन जीवों के कौन-सी प्रमुखरूप से होती हैं। अब प्रस्तुत गाथा में उन चेतनाओं के स्वामी कौन-कौन है उनका कथन करते हैं।

गाथा–३९

सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्जजुदं।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विदंति ते जीवा।।

(हरिगीत)

थावर करम फल भोगते, त्रस कर्म युत फल अनुभवें।
प्राणित्व से अतिक्रान्त जिनवर वेदते हैं ज्ञान को ।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने कहा है कि ह्न सर्व स्थावर जीव समूह वास्तव में कर्मफल को वेदते हैं। त्रस वास्तव में कार्य सहित कर्मफल को वेदते हैं और जो प्राणों का अतिक्रम कर गये वे केवलज्ञानी ज्ञान को ही वेदते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यहाँ कौन क्या चेतता है ? यहाँ ! चेतता है, अनुभव करता है, उपलब्ध करता है और वेदता है ह्न ये सब कथन एकार्थवाचक हैं। स्थावर जीव कर्मफल को चेतते हैं, त्रस कार्य (कर्म) को चेतते हैं और केवलज्ञानी ज्ञान को चेतते हैं।

भावार्थ यह है कि पाँचप्रकार के स्थावर जीव अव्यक्त सुख-दुखानुभव रूप शुभाशुभ कर्मफल को चेतते हैं। द्वीन्द्रियादि त्रस जीव उसी कर्मफल को इच्छापूर्वक इष्टानिष्ट विकल्परूप कार्य सहित चेतते हैं तथा परिपूर्ण ज्ञानवन्त भगवन्त अनन्त सौख्य सहित ज्ञान को ही चेतते हैं।

आचार्य जयसेन कहते हैं कि निर्मल, शुद्धात्मानुभूति के अभाव से उपार्जित प्रकृष्टतर मोह से मलीमस चेतकभाव द्वारा प्रच्छादित सामर्थ्यवाली होती हुई एक स्थावर जीव राशि कर्मफल का वेदन करती है। दूसरी त्रस जीवराशि उसी चेतक भाव से सामर्थ्य प्रगट हो जाने के कारण इच्छापूर्वक इष्ट-अनिष्ट विकल्परूप कार्य का वेदन करती है तथा तीसरी जीवराशि उसी चेतकभाव से विशुद्ध शुद्धात्मानुभूति की भावना द्वारा कर्मकलंक को नष्ट कर देने के कारण केवलज्ञान का अनुभव करती है।

कविवर हीराचंदजी इसी भाव को अपनी पद्य शैली में कहते हैं कि ह्न

(अडिल्ल)

सरव करमफल-मगन सु थावरकाय है।
अवर करमफल-लगनि सु त्रस बहुभाय है।।
दस प्राननिकरि रहित सिवालय सिद्ध है।
ग्यानरूप अनुभवै सु चेतन रिद्ध है ।।

गुरुदेवश्री ने इस गाथा पर प्रवचन करते हुये विशेष बात कही है कि ह्न

- तीन प्रकार के जीव तीन प्रकार की चेतना को धारण करते हैं।
- अनंत एकेन्द्रिय जीव हर्ष-शोक को अर्थात् मुख्यरूप से कर्मफल चेतना को धारण करते हैं।
- असंख्यात त्रस जीव मुख्यता से राग-द्वेषरूप कर्मचेतना को धारण करते हैं।
- अनंत सिद्ध और अरहंत केवली मात्र ज्ञानचेतना को धारण करते हैं।

जीव जड़ की अवस्था नहीं कर सकता; क्योंकि राग के कारण जड़ की अवस्था नहीं होती। जड़ का होना जड़ में है और राग का होना आत्मा में है। पुद्गल अस्ति है और स्कंधरूप होना वह उसकी काय है। दान देने वाले ने शुभराग किया है; परन्तु रुपये-पैसे रूप पुद्गल में फेरफार करना लेन-देन की क्रिया करना ज्ञानी या अज्ञानी के अधिकार में नहीं है।

''अज्ञानी जीव कहता है कि अपने को इतनी अधिक प्रवृत्ति नहीं करना है और इसप्रकार का शुभभाव भी नहीं करना कि जिससे आत्मा की प्रवृत्ति बाह्य में बढ़ जाए। उससे कहते हैं कि जब तू बाहर की पर्याय में प्रवेश ही नहीं कर सकता तो वहाँ से वापस हटकर निवृत्ति ले, यह प्रश्न ही नहीं उठता। पुद्गल परमाणुओं का अस्तिकायरूप होना या नहीं होना, वह उनके आधीन है, तेरे आधीन नहीं। किसी के कारण किसी का अस्तित्व टिक सकता है अथवा बदल सकता है ह्न ऐसा नहीं होता। जिसकाल में जो संयोग होना है उस काल में वे संयोग ही होंगे। उनको लाना या हटाना किसी के अधिकार की बात नहीं है; और जो राग जिस काल में होना है वह राग उस काल में होना ही है। दृष्टि राग पर है या ज्ञानस्वभाव पर है ह्न उससे धर्म-अधर्म का माप है। यदि स्वभाव पर दृष्टि करके ज्ञान करे तो धर्मी है और जिसकी दृष्टि संयोग तथा राग पर है वह अधर्मी है।

अज्ञानी पर में फेरफार करना चाहता है ह्न यही भ्रान्ति है। पर पर के कारण होता है तथा राग स्वयं के कारण एकसमय मात्र का होता है ह्न ऐसा ज्ञान करके उसको हेय समझकर, त्रिकाली शुद्धस्वभाव को उपादेय मानना जीव के अधिकार की बात है। इसप्रकार निमित्त और पर्याय की दृष्टि बदलकर त्रिकाली स्वभाव की रुचि करना ही धर्म है।''

इसप्रकार ३९वीं गाथा में कहा है कि सभी स्थावर काय के जीव कर्मफल चेतना को वेदते हैं, त्रस जीव कर्मचेतना सहित कर्मफलचेतना को वेदते हैं तथा प्राणों का अतिक्रमण करनेवाले जीव ज्ञानचेतना को वेदते हैं।

गाथा–४०

उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि ।।४०।।

(हरिगीत)

ज्ञान-दर्शन सहित चिन्मय द्विविध है उपयोग यह।
ना भिन्न चेतनतत्व से है चेतना निष्पन्न यह ।।

३९ वीं गाथा में चेतना के तीन प्रकारों को समझाकर इस गाथा में उपयोग का व्याख्यान करते हुए आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि जीव ज्ञान और दर्शन इन दो उपयोग सहित होते हैं। ये दोनों उपयोग सभी जीवों के अनन्य रूप से सदैव रहते हैं।

इस गाथा की टीका में आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि 'आत्मा का चैतन्यानुविधायी परिणाम उपयोग हैं। 'अनुविधायी' अर्थात् अनुसरण करनेवाला। इसप्रकार हम कह सकते हैं कि चैतन्य के अनुसरण करनेवाले परिणाम को उपयोग कहते हैं। वह दो प्रकार का है ह्न दर्शन उपयोग और

ज्ञानोपयोग।

जिस उपयोग में वस्तुओं का विशेष प्रतिभास होता हैं, वह ज्ञानोपयोग है और जिस उपयोग में वस्तु के सामान्य स्वरूप का प्रतिभास हो, वह दर्शन उपयोग है। वह ज्ञान-दर्शानोपयोग जीव से सर्वदा अभिन्न होता है; क्योंकि वह एक आत्मा के उपयोग से ही रचित है।

आचार्य जयसेन अपनी टीका में कहते हैं कि वास्तव में जीव के सर्वकाल अनन्यरूप से रहनेवाला ज्ञान और दर्शन से संयुक्त उपयोग दो प्रकार का है। वह उपयोग जीव के साथ नित्यतादात्म्य संबंध होने से अभिन्न है।

इस गाथा के भाव को कविवर हीरानन्दजी ने अपनी पद्य शैली में निम्नप्रकार अभिव्यक्त किया है ह्न

(सवैया)

चेतना क्रिया का अनुगामी परिनाम सो है,
सोई उपयोग नाम जीवगुन गाया है।
तामैं दोइ भेद लसै ग्यान-दृगरूप यामैं,
ग्यान है विसेष ग्राही नानाकार पाया है।
भेदभाव झारिकरि जाति सामान दरसी,
दर्सनोपयोग सोई निराकार भाया है।
वस्तु है अभेद उपयोग जीव नाम भेद,
अस्ति एकरूप स्यादभाषा ने बताया है।।२१६।।

(दोहा)

सुद्ध असुद्ध सुभावकरि, उपयोगी दुय भेद।
तजि असुद्ध पहिली दसा, सुद्ध सुभाव निवेद।।२१७।।

उक्त छन्दों में कहा है कि उपयोग चेतना क्रिया का अनुगामी परिणाम है। इसके दो भेद हैं ह्न ज्ञान और दर्शन। ज्ञानगुणविशेषग्राही है और दर्शनगुण वस्तु के सामान्य अर्थ को ग्रहण करता है।

शुद्धोपयोग एवं अशुद्धोपयोग के भेद से भी उपयोग के दो भेद हैं। शुभाशुभभावरूप अशुद्ध उपयोग को त्याग कर शुद्ध उपयोग को प्राप्त होना चाहिए।

इसी गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कहते हैं ह्न यद्यपि उपयोग ज्ञानगुण की पर्याय है, तथापि चैतन्य की सामर्थ्य बतलाने के लिए उसके गुण कहा है। इसमें चेतना के बारह भेद और उनकी सामर्थ्य बतलायेंगे।

वास्तव में चेतना के ज्ञान-दर्शन के भेद से दो प्रकार के परिणाम हैं। वे आत्मा से होते हैं इन्द्रिय मन के कारण अथवा वाणी या शास्त्र आदि से नहीं होते। शास्त्र वाणी आदि तो पुद्गलास्तिकाय है। उपयोगरूप परिणाम जीवास्तिकाय में होते हैं। अपने ज्ञान का व्यापार असंख्य प्रदेशों में स्वयं के कारण स्वयं की सत्ता से होता है।

व्यवहार से आत्मा तथा उपयोग में भेद है। केवलज्ञान और केवली प्रभु ऐसा संज्ञाभेद से भेद होने पर भी प्रदेशभेद से भेद नहीं है। जिसतरह गुड़ व मिठास में व्यवहार से भेद होने पर भी परमार्थ से भेद नहीं है; क्योंकि गुण का नाश होने पर गुणी का और गुणी का नाश होने पर गुण का नाश होता है, इसलिए गुण-गुणी एक हैं।

इसप्रकार इस गाथा में उपयोग का स्वरूप एवं भेद बताकर उससे आत्मा को अभेद सिद्ध किया है। ●

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करे ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें लगभग 171 छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 360 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 52 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राजस्थान विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (तीन वर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो एम.ए. के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 25 जून 2005 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें। यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें कोल्हापुर, महाराष्ट्र में 13 मई से 30 मई, 2005 तक होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक (18 दिन) रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

कोल्हापुर का पता –
श्री सर्वोदय स्वाध्याय समिति
द्वारा श्री कैलाशचन्दजी जैन
चैतन्य संकुल, साहूपुरी, पहली गल्ली,
कोल्हापुर-416001 (महा.)
फोन- (0231) 2653384

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
श्री टोडरमल जैन सिद्धा. महाविद्यालय,
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.)
फोन- (0141) 2705581, 2707458

कहानी –

मान से मुक्ति की ओर...

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे....)

मेरा घर पास में ही था, उनकी ठहाकों की आवाज सुनकर मेरा मन भी उनकी खट्टी-मीठी बातें सुनने को मचलने लगता। मुझे भी घर में अकेले बैठे रहना अच्छा नहीं लगता, इसकारण मैं भी उनकी महफिल में शामिल होकर मूकदर्शक बना उनकी बातों से अपना मनोरंजन करता रहता।

बैठे हुए व्यक्तियों पर रौब जमाने हेतु सेठ जिनचन्द्र स्वयं के नकली बड़प्पन को प्रदर्शित करने और दूसरों की दरिद्रता व हीनता-दीनता को दर्शाते हुए, उजागर करते हुए कहने लगता ह्न वे इन्दौरवाले बड़े धन्ना सेठ बने बैठे हैं, उस पंचकल्याणक में बड़ी शान से मेरे सामने सौधर्म इन्द्र की बोली लगाने खड़े हो गये। मैंने सीधे पचास हजार बोले तो उन्होंने आव देखा न ताव, सीना ताने मेरी बोली पर सीधे पाँच-पाँच हजार बढ़ाने लगे।

मैंने मन में कहा ह्न 'ठीक है बेटा ! तू भी आजा मेरे सामने। मैंने आज भरी सभा में तेरी नाक न कटाई तो मेरा नाम जिनचन्द्र नहीं।'एक खुशामदी बोला ह्न सेठजी आपने सोचा तो अच्छा; परन्तु फिर आखिर में हुआ क्या ?

होना क्या था, मैंने कोई कच्ची गोलियाँ थोड़े ही खेली हैं, जैसे-जैसे वह बढ़ता गया, मैं भी बढ़ता गया। दो लाख तक पहुँचते ही वह टाँय-टाँय फिस्स हो गया, हिम्मत हार गया, मुँह लटका कर बैठ गया।

दूसरा पड़ौसी आश्चर्य प्रगट करते हुए बोला ह्न तो आपने दो लाख में बोली ले ली !

सेठ बोला ह्न और नहीं तो क्या ? मैंने ही ली। मेरे सामने और किसकी हिम्मत थी, जो मेरा सामना करता।

तीसरा बोला ह्न काम तो आपने बहुत अच्छा किया। इससे पूरे गाँव का नाम ऊँचा हुआ; परन्तु यदि बुरा न मानो तो एक बात पूँछू। (डरते-डरते उसने प्रश्न किया)

सेठ अकड़कर बोला ह्न एक ही क्यों ? तू दो प्रश्न पूछ न ! प्रश्न पूछने में बुरा मानने की बात ही क्या है ?

वीतराग-विज्ञान पाठशालावाले कह रहे थे कि आपका पाठशाला का लिखाया चन्दा तीन साल से बाकी निकल रहा है। इसकारण पाठशाला के पण्डितजी को प्रतिमाह वेतन चुकाने में भारी कठिनाई होती है, यहाँ-वहाँ से माँगकर पूर्ति करनी पड़ती है। बेचारे पण्डितजी का दैनिक खर्चा वेतन से ही तो चलता है। उन्होंने यह भी कहा कि ह्न 'हम इसके लिए सेठ के घर कई चक्कर काट चुके हैं; पर उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगता।' क्या यह बात सही है ?

सेठ तुनक कर बोला ह्न अरे भैया ! तुम बहुत भोले हो। तुम्हें तो पता ही है कि ये चन्दा-फन्दावाले आये दिन खड़े ही रहते हैं, कभी कोई तो कभी कोई।

चौथा बोला ह्न हाँ, सो तो है। आप दानवीर जो ठहरे ! जब आपको हजारों लोगों की उपस्थिति में पंचकल्याणक के मेले में 'दानवीर' उपाधि की घोषणा हुई तो हजारों लोगों ने सुना और दूसरे दिन लाखों लोगों ने पेपर में भी यही समाचार पढ़ा तो चन्दा लेनेवाले तो आयेंगे ही। वे लोग आपके यहाँ नहीं आयेंगे तो और कहाँ जायेंगे ?

सेठ ने कहा ह्न हाँ, भैया यही सोचकर तो बोली बोलते हैं और चन्दा लिखा देते हैं; पर इसका मतलब यह तो नहीं कि वे साहूकार बनकर कर्ज वसूली की तरह तगादा करें। क्या हमने किसी का कर्ज लिया है, जो चिंता करें। बोली ही तो ली है, चन्दा ही तो लिखाया है, इसमें कौनसा पाप का काम कर लिया ? जब होंगे तब दे देंगे।

हमने तो तगादा करनेवालों से साफ-साफ कह दिया ह्न आइन्दा हमारे पास कोई भी तगादे का पत्र या फोन नहीं आना चाहिए, वरना हमसे बुरा भी कोई नहीं।

पाँचवाँ बोला ह्न सेठजी ! अभी तो आप कह रहे थे कि बेटे को शेयर में एक करोड़ मिला है, फिर पुराना लिखाया हुआ चन्दा चुका क्यों नहीं देते ?

सेठ ने आँख बदलते हुए कहा ह्न हाँ, हाँ मिला है, पर ऐसे लुटाने को थोड़े ही मिला है। घर की जरूरतें भी तो होती हैं। कल ही तो उसने पचास लाख का नया बंगला लिया है। पच्चीस लाख की नई मरसरीज गाड़ी बुक कराई है। दस लाख के बहू के लिए हीरों के गहने बनवायें हैं, मेरी 50वीं वर्षगाँठ को मनाने का लगभग 5 लाख का बजट है, उसमें सिनेतारिका ऐश्वर्या राय का नाइट शो होगा। दो लाख तो वही ले जायेगी। दैनिक खर्चे में पोते-पोतियों का 100-200 रुपये रोज का तो जेब खर्च ही है। बेटे के बाररूम की महफिल का खर्च अलग। अब तुम्हीं सोचो ये जरूरी कामों की सोचें या पहले पुराना चन्दा-चिट्ठा चुकायें और दान-पुण्य करें।

दान-पुण्य तो मात्र सामाजिक प्रतिष्ठा की बातें हैं सो जब जैसा मौका आता है, बोल-बाल देते हैं।

हाँ, अपने नाम का एक चैरिटेबल ट्रस्ट बनाने का विचार जरूर है। उसे टेक्स फ्री कराने की कोशिश करेंगे और उसके द्वारा विधवा सहायता और कन्याशाला चलाने का काम करेंगे।

आपस में कानाफूसी करते हुए वहाँ बैठे लोगों ने टिप्पणी की ह्न सेठ है तो बड़ा दूरदर्शी ! सेठानी बीमार रहने लगीं हैं न ! उससे अब चलते-फिरते, उठते-बैठते भी तो नहीं बनता, इसलिए सेठ विधवा सहायता और कन्याशाला के बहाने औरतों का मेला लगायेगा और अधिक कुछ नहीं तो उन विधवाओं और शिक्षिकाओं को घूर-घूरकर अपनी आँखे ही सेंक लिया करेगा।

कोई अपने मनोविकारों को कितना भी छिपाये, पर चेहरे की आकृति हृदय की बात कह ही देती है। खोटी नियत जाहिर हुए बिना नहीं रहती और खोटी नियत का खोटा नतीजा भी सामने आ ही जाता है। इसीकारण तो पास बैठे लोगों ने सेठ की खोटी नियत को भांप लिया था।

एक दिन वह सेठ घर के बाहर उसी चबूतरे पर बैठा अपने पूर्व परिचित चाटुकारों और खुशामद करनेवालों के बीच उन पर अपना रौब जमाने के लिए लम्बी-लम्बी छोड़ रहा था। लाखों-करोड़ों के बड़े-बड़े व्यापार करने एवं उसमें मुनाफा मिलने की बातें कर रहा था। संयोग से दो-तीन अपरिचित व्यक्ति भी वहाँ आ बैठे, जिनकी ओर उसका ध्यान नहीं गया।

उसकी ऊँची-ऊँची बातें सुनकर उन अपरिचितों के मन में लोभ आ गया। उन्होंने सोचा ह्न यह तो मोटा मुर्गा है, यदि यह अपनी पकड़ में आ गया तो

अपना जन्मभर का दलद्दर दूर हो जायेगा। फिर रोज-रोज अपनी जान को जोखिम में डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी।

फिर देर किस बात की थी; उन्होंने वहीं योजना बना डाली। कल ही प्रात: 5 बजे नेशनल पार्क में घूमने आनेवाले इस सेठ के बेटे का अपहरण कर लिया जाय और एक करोड़ फिरौती में इससे वसूल किये जायें।

सुनियोजित योजना के अनुसार सेठ के बेटे जिनेश्वर का अपहरण हो गया और फोन पर सेठ को यह धमकी दे दी गई कि यदि 24 घंटों में एक करोड़ की फिरौती निर्धारित स्थान पर लेकर नहीं आया तो बेटे को जान से मार दिया जायेगा।

यदि पुलिस को सूचित किया तो तुम्हारी बीबी भी विधवा हो जायेगी।

सेठ जिनचन्द्र ने ज्यों ही समाचार सुना तत्काल उसके सीने में दर्द हो गया, हल्का-सा हार्ट-अटैक हो गया। पहले तो वह सीना दबाकर वहीं बैठ गया; फिर तत्काल हिम्मत करके स्वयं को संभालते हुए अपने किए हुये पापों का पश्चाताप करने लगा।

अब उसकी समझ में सबकुछ आ गया था। वह सोचता है ह्न ''न मैं अभिमान के पोषण के लिए दूसरों के सामने अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करता और न यह नौबत आती। मैंने स्वयं ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी पटकी है, अन्यथा किसे पता था कि मेरे पास क्या है ? कितना है ? मेरे ही बेटे का अपहरण क्यों हुआ ? औरों का क्यों नहीं ?

वस्तुत: मैंने ही अपने वैभव के प्रदर्शन की लम्बी-लम्बी बातें करके इस मुसीबत को मोल ले लिया है, लुटेरों को आमंत्रित किया है।

न मैं उस दिन एक करोड़ की चर्चा करता और न ये घटना घटती।

स्वयं बड़ा और दूसरों को छोटा, स्वयं को ऊँचा और दूसरों को नीचा दिखाने के चक्कर में यह झंझट सेठ के गले पड़ गई थी।

नीतिकारों ने ठीक ही कहा है कि ह्न जिस भाँति ज्ञानीजन निज निधि को एकान्त में ही भोगते हैं, उसीतरह व्यवहारीजनों को भी अपने मान पोषण के लिए अपने बाह्य वैभव का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

एक ही झटका लगने से सठ को थोड़ी-थोड़ी अक्कल आ गई थी, अत: सोचता है कि गुरुजी ने ठीक ही कहा था कि ह्न ''धन का संचय अन्याय से नहीं करना, क्योंकि अन्याय का पैसा कालान्तर में मूल पूँजी सहित नष्ट हो जाता है।''

दूसरी बात गुरुदेव ने यह भीकही थी कि ह्न न्यायोपात्त धन का अधिकतम चौथा और न्यूनतम दसवाँ भाग सत्कार्यों में, ज्ञानदान में और परोपकार में लगना चाहिए तथा 'तुरत दान महाकल्याण' जितना जो बोल दिया हो, देने की घोषणा कर दी हो, तत्काल दे देना चाहिए। क्या पता अपने परिणाम या परिस्थितियाँ कब विपरीत हो जायें और दिया हुआ दान न दे पायें।

तीसरी बात ह्न शक्ति से अधिक नहीं देना, अन्यथा आकुलता हो सकती है तथा लोभ के वश शक्ति भी नहीं छुपाना।

चौथी अन्तिम बात गुरुदेव ने यही कही थी कि दान देकर उसके फल की वांछा-कांक्षा नहीं करना, बदले की अपेक्षा नहीं रखना।

अपनी आलोचना और प्रायश्चित्त करते हुए सेठ कहता है कि ''मैंने विवेक शून्य होकर उपर्युक्त चारों बातों का ध्यान नहीं रखा। इसकारण यह संकट मेरे ऊपर आया है। अत: मैं संकल्प करता हूँ कि पुण्योदय से प्राप्त धन विषय-कषाय की पूर्ति और दुर्व्यसनों में बर्बाद नहीं करूँगा।

पर अभी क्या करूँ ? पुलिस का सहारा लेता हूँ तो पहले पुलिस की ही पूजा करनी पड़ेगी ? क्या पता पुलिस कितने रुपये माँगे ? माँगे या न माँगे; पर उसे सक्रिय करने के लिए कुछ प्रलोभन तो देना ही पड़ेगा।

सेठ यह सोच ही रहा था कि फोन की पुन: घंटी बजी, फोन उठाया तो कानों में आवाज आई ह्न 'सेठ क्या सोच रहे हो ? ध्यान रखना यदि पुलिस का सहारा लिया तो बेटे की लाश मिलेगी। हमारा कुछ भी हो, पर तुम्हें बेटे से हाथ धोना पड़ेंगा।'

यह समाचार सुनकर सेठ किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उसे चक्कर आ गये। सीने में दर्द हुआ, फिर सीना दबाकर बैठ गया। सोचने लगा ह्न गुरुजी ने ठीक ही कहा था कि यह सब पुण्य-पाप का खेल है। अब पांसा पलट गया, फिर पाप का उदय आ गया। मैं पैसे को पाकर विवेकशून्य हो गया था। अब जो कुछ हुआ सो हुआ। सबसे पहले एक करोड़ का इन्तजाम कर बेटे को छुड़ाने का प्रयत्न करना चाहिए।

सेठ ने 50 लाख में कोठी बेची। बहू के जेवरात और गाड़ी आदि सबकुछ बेचकर पैसे की व्यवस्था की। थैली में भरकर फोन पर बताये ठिकाने की ओर जा रहा था कि कुछ गुंडे पीछे लग गये और रास्ते में वे रुपया सेठ से छीन कर भाग गये।

अब सेठ की दशा दयनीय हो गई। वह आत्मघात की सोच ही रहा था कि पुन: मोबाइल की घंटी बजी ह्न ''सेठ मरने से दुख से मुक्ति नहीं मिलेगी। कोई बात नहीं चिन्ता मत करो...। तुम्हारे रुपये हमें मिल गये। तुमसे पैसे छीननेवाले हमारे ही आदमी थे। तुम यदि हमारे ठिकाने तक आते तो तुम्हें और हमें दोनों को पुलिस पकड़ लेती, क्योंकि उस ठिकाने को पुलिस ने पहले से ही घेर रखा था।''

तुम चिन्ता न करो तुम्हारा बेटा कल तुम्हारे घर पहुँच जायेगा।

आतंकवादी डाकुओं से मुक्त हुए जिनचन्द्र के बेटे ने बाप के कड़वे-मीठे अनुभवों को सीखकर उत्तम श्रेणी का व्यक्ति बन कर वह खोटी राह ही नहीं अपनाई, जिसमें कांटे ही कांटे थे।

सेठ से अब न रोते बनता था और न हँसते बन रहा था। जहाँ बेटा के सकुशल लौटने का बहुत हर्ष था, वहीं सर्वस्व समाप्त होकर पुन: सड़क पर आ जाने, करोड़पति से रोड़पति बन जाने का दु:ख भी कम नहीं था।

यह सब पुण्य-पाप का विचित्र खेल 12 वर्ष की समयावधि में ही देखकर सेठ संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो गया। उसे ऐसा वैराग्य आया कि उस घर-परिवार से मुँह मोड़कर पुन: करोड़पति बनने का सपना-विकल्प छोड़कर पुण्य-पाप से पार आत्मा के उस अनन्त वैभव को प्राप्त करने के लिए चल पड़ा, जिसका कभी अन्त नहीं आता, जो कभी नष्ट नहीं होता। ●

प्रतियोगिता सम्पन्न

उदयपुर : यहाँ 6 फरवरी को श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन चैत्यालय मुखर्जी चौक में वीतराग-विज्ञान रविवारीय पाठशाला के बच्चों की **हम हैं ज्ञानवान** प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता में निष्ठा जैन, वारिष जैन, श्वेता जैन एवं रुचिका जैन ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

संचालन श्रीमती आशा पाण्ड्या ने किया। **– जिनेन्द्र शास्त्री**

तत्त्वचर्चा
प्रवचनसार का सार 23
ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

आगे आचार्य द्रव्य-गुण-पर्याय का विश्लेषण करते हैं।

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में कहा है कि ह्न **'गुणपर्ययवद् द्रव्यम्'** अर्थात् द्रव्य गुणपर्यायात्मक है। **'सद्द्रव्यलक्षणम्'** अर्थात् सत् द्रव्य का लक्षण है और **'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्'** अर्थात् सत् उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त होता है।

तत्त्वार्थसूत्र के उक्त कथनों की अपेक्षा प्रवचनसार के इस द्रव्य-सामान्यप्रज्ञापन अधिकार में प्रतिपादित विषयवस्तु की विशेषता यह है कि तत्त्वार्थसूत्र में गुण-पर्याय के समुदाय को द्रव्य कहा है, जबकि यहाँ द्रव्य-गुण-पर्याय के समुदाय को अर्थ कहा गया है।

जो द्रव्यों के सभी प्रदेशों में अनादिकाल से अनंतकाल तक रहनेवाले हैं; उनको गुण कहते हैं अर्थात् जहाँ काल की एवं क्षेत्र की सीमा नहीं है, जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागों (प्रदेशों) में एवं उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओं में सदा विद्यमान रहते हैं, उन्हें गुण कहा जाता है।

द्रव्य-गुण-पर्यायात्मक प्रत्येक वस्तु (अर्थ-पदार्थ) के साथ द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव भी जुड़े हुए हैं। द्रव्य अर्थात् वस्तु, क्षेत्र अर्थात् प्रदेश, काल अर्थात् उसकी अनंतानंतपर्यायों की अनादि-अनंतता और भाव अर्थात् अनन्त गुण।

जो सभी क्षेत्र अर्थात् सम्पूर्ण प्रदेशों में, सभी पर्यायों में अर्थात् अनादिकाल से अनंतकाल तक सभी अवस्थाओं में एकसा विद्यमान रहता है, उसे गुण कहा जाता है।

पर्यायें मूलत: दो प्रकार की होती हैं ह्न द्रव्यपर्याय और गुणपर्याय। द्रव्यपर्याय को व्यंजनपर्याय और गुणपर्याय को अर्थपर्याय भी कहते हैं।

अनेक द्रव्यों की मिली हुई पर्याय को द्रव्यपर्याय या व्यंजनपर्याय कहते हैं और गुणों के परिणमन को गुणपर्याय या अर्थपर्याय कहते हैं।

द्रव्यपर्याय अर्थात् व्यंजनपर्याय भी दो प्रकार की होती है ह्न समान-जातीयव्यंजनपर्याय और असमानजातीयव्यंजनपर्याय।

समान जाति के अनेक द्रव्यों की मिली हुई पर्याय को समानजातीय व्यंजनपर्याय कहते हैं। अनेक पुद्गल परमाणु से निर्मित होने के कारण स्कन्धों को समानजातीयव्यंजनपर्याय कहते हैं।

असमान जाति के अनेक द्रव्यों से मिली हुई पर्याय को असमान-जातीयव्यंजनपर्याय कहते हैं। जीव और पुद्गलों के संयोग से उत्पन्न होनेवाली मनुष्यादि पर्यायें असमानजातीयव्यंजनपर्यायें कही जाती हैं।

गुणपर्यायें भी दो प्रकार की होती हैं ह्न स्वभावपर्यायें और विभाव-पर्यायें। पुद्गल की परमाणु और जीव की केवलज्ञानादि स्वभावगुणपर्यायें हैं और जीव के ज्ञानगुण की मतिज्ञानादि और पुद्गल की स्कन्ध आदि पर्यायें विभावपर्यायें हैं।

व्यवहारनय दो प्रकार का कहा गया है। अपने ही अन्दर भेद करना सद्भूतव्यवहारनय है एवं अनेक द्रव्यों को मिलाकर कथन करना असद्भूतव्यवहारनय है।

मनुष्यादि असमानजातीयव्यंजनपर्याय असद्भूतव्यवहारनय का विषय है; क्योंकि मनुष्यादि पर्यायें अनेक द्रव्यों की मिली हुई पर्यायें हैं।

अनादिकाल से इस आत्मा ने यदि एकत्वबुद्धि की है तो वह मनुष्यादि पर्यायरूप इस असमानजातीयद्रव्य (व्यंजन) पर्याय में ही की है।

समानजातीयद्रव्यपर्याय में दो जीवों की पर्याय मिलकर एक पर्याय नहीं बनती है; क्योंकि समानजातीयद्रव्यपर्याय पुद्गलों में ही होती है। मकान में 'यह मेरा है' ह्न यह ममत्वबुद्धिरूप और अपने शरीर में 'ये मैं हूँ' ह्न यह एकत्वबुद्धिरूप मूढ़ता है। ऐसा पर्यायमूढ़ व्यक्ति ही परसमय है। इसप्रकार आचार्यदेव ने इन गाथाओं में जो चर्चा की है, वह विशेष कर असमानजातीयद्रव्यपर्याय एवं समानजातीयद्रव्यपर्याय की ही की हैह्न

छहढाला में कहा है ह्न

'देह जीव को एक गिने बहिरातम तत्त्वमुधा है।।३/४।।'

तत्त्व के संबंध में मूढ़ बहिरात्मा शरीर और जीव को एक ही मानता है।

इन गाथाओं के सन्दर्भ में पर्यायमूढ़ की चर्चा करनेवाले जो विद्वान केवलज्ञानपर्याय में अपनत्व स्थापित करने की बात करते हैं, वे इस ओर ध्यान दें कि यहाँ केवलज्ञानादि पर्यायों की बात नहीं, मनुष्यादि पर्यायों की ही बात है। मैं मनुष्य हूँ, मैं तिर्यंच हूँ, मैं देव हूँ, मैं नारकी हूँ ह्न इसप्रकार संयोगों में अर्थात् प्राप्त अवस्था में जो एकत्वबुद्धि करता है, उसे ही यहाँ पर्यायमूढ परसमय कहा है।

अब ९५वीं गाथा को समझते हैं; जिसमें आचार्यदेव ने द्रव्य के स्वरूप की चर्चा की है।

अपरिच्चत्तसहावेणु ण्पादव्वयधुवत्तसंबद्धं।
गुणवं च सपज्जायं जं तं दव्वं ति वुच्चंति।।९५।।

(हरिगीत)

निजभाव को छोड़े बिना उत्पादव्ययध्रुवयुक्त गुण-
पर्ययसहित जो वस्तु है वह द्रव्य है जिनवर कहें।।९५।।

स्वभाव को छोड़े बिना जो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यसंयुक्त हैं तथा गुणयुक्त और पर्यायसहित हैं, उसे 'द्रव्य' कहते हैं।

'गुणपर्ययवद् द्रव्यम्' 'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्' 'सद् द्रव्य-लक्षणम्' इसप्रकार तत्त्वार्थसूत्र में द्रव्य की परिभाषा तीन सूत्रों में बताई है। यहाँ एक ही गाथा में ये तीनों सूत्र समाहित हैं।

'स्वभाव को छोड़े बिना' ह्न ऐसा कहकर आचार्यदेव ने यहाँ एक और विशेष बात बताई है।

द्रव्य का लक्षण सत् है। सत् को सत्ता अथवा अस्तित्व भी कहते हैं। इसप्रकार अस्तित्व द्रव्य का लक्षण है। द्रव्य अनंतानंत हैं। उनमें जीव अनंत हैं, पुद्गल अनंतानंत हैं, धर्म, अधर्म एवं आकाशद्रव्य एक-एक हैं तथा कालद्रव्य असंख्यात हैं।

इन सबमें द्रव्य का अस्तित्व लक्षण घटित होता है।

अस्तित्व अर्थात् सत्ता। सत्ता और अस्तित्व दो-दो प्रकार के हैं ह्न १. महासत्ता २. अवान्तरसत्ता। १. सादृश्यास्तित्व २. स्वरूपास्तित्व। महासत्ता सादृश्यास्तित्व का ही दूसरा नाम है एवं अवान्तरसत्ता स्वरूपास्तित्व का दूसरा नाम है।

अपने स्वभाव को छोड़े बिना ह्न इस पद का अर्थ यह है कि वस्तु स्वरूपास्तित्व को छोड़े बिना सादृश्यास्तित्व में सम्मिलित है।

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ कि आप दिगम्बर हैं या जैन हैं ?

हम जैन भी हैं और दिगम्बर भी हैं; क्योंकि दिगम्बर जैन हैं। दिगम्बर और जैन ह्न दोनों का एक साथ होने में कोई विरोध नहीं है।

इसीप्रकार स्वरूपास्तित्व को छोड़े बिना हम सादृश्यास्तित्व में शामिल हैं। इसप्रकार हम अवान्तरसत्ता और महासत्ता ह्न दोनों से समृद्ध हैं; क्योंकि हम ज्ञानानन्दस्वभावी हैं। इसमें ज्ञानानन्दस्वभाव हमारी अवान्तरसत्ता है और 'हैं' अर्थात् अस्तित्व महासत्ता है।

हम चेतन होकर भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से संयुक्त और गुणपर्याय से युक्त द्रव्य हैं। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से युक्त और गुण-पर्यायों से सहित होना हमारी महासत्ता है और ज्ञानानन्दस्वभावी चेतन होना हमारी अवान्तर सत्ता है। महासत्ता से हम सबसे जुड़े हैं और अवान्तरसत्ता की वजह से हमारा अस्तित्व स्वतंत्र है।

इसप्रकार हमने स्वरूपास्तित्व को छोड़ा नहीं है और हम सादृश्यास्तित्व में शामिल हैं। हम ऐसी महासत्ता के अंश हैं, जिसमें स्वरूपास्तित्व को छोड़ना जरूरी नहीं है। मैं अपने स्वरूपास्तित्व में भी शामिल हूँ एवं सादृश्यास्तित्व में भी शामिल हूँ।

इसप्रकार सभी जीव द्रव्य सादृश्यास्तित्व एवं स्वरूपास्तित्व से युक्त हैं। सभी का अस्तित्व समान है। आप भी अनंतगुणवाले हो एवं मैं भी अनंतगुणवाला हूँ, पुद्गल भी अनंतगुणवाला है। आप भी गुणपर्याय से युक्त हैं एवं मैं भी गुणपर्याय से युक्त हूँ। महासत्ता की अपेक्षा हम, तुमह्न सभी एक हैं, एक से हैं; अत: इस अस्तित्व का नाम सादृश्यास्तित्व है।

सादृश्य अर्थात् एक-सा होना। एक से होने में भी जगत में 'एक हैं' ह्न ऐसा व्यवहार किया जाता है। हम सभी जैन एक हैं। हममें भी जैनत्व की श्रद्धा है और आपमें भी जैनत्व की श्रद्धा है। इसप्रकार हम कहना तो यही चाहते हैं कि 'हम एक से हैं।' परंतु सादृश्यास्तित्व की लोक में ऐसी भाषा है कि उसे 'एक हैं' ह्न ऐसा ही कहा जाता है; क्योंकि यदि 'एक-सा' ऐसा कहते हैं तो उसमें भेद नजर आता है; परंतु 'एक' ऐसा कहने में एकता नजर आती है।

अत: हमें यह अपने ज्ञान में समझ लेना चाहिए कि हम जो ऐसा कह रहे हैं कि हम सब जैन एक हैं, हम सब भारतीय एक हैं ह्न यह सब सादृश्यास्तित्व की विवक्षा से कहा जा रहा है।

इसपर यदि कोई ऐसा कहे कि हम सब एक हैं तो यह दिगम्बर और श्वेताम्बर का चक्कर क्यों लगा रखा है ? हम सब यदि एक हैं तो ऐसा भेद क्यों है ?

यद्यपि हम सादृश्यास्तित्व की अपेक्षा से एक हैं; परंतु स्वरूपास्तित्व की अपेक्षा से हम किसी से भी एक (अभेद) नहीं है। यह सादृश्यास्तित्व का जो कथन जिनागम में किया है, वह स्वरूपास्तित्व को छोड़े बिना है। हमने उस स्वरूपास्तित्व को छोड़कर पर के साथ एकत्व स्थापित कर लिया है ह्न यही मिथ्यादर्शन है, यही पर्यायमूढता है, परसमयपना है।

'मैं मनुष्य हूँ' ह्न ऐसा जब कहा जाता है, तब वहाँ मात्र जीवद्रव्य के ही गुण-पर्याय समाहित नहीं हैं, अपितु पुद्गलद्रव्य के गुण-पर्याय भी समाहित हैं। इसप्रकार यहाँ पर से एकत्व स्थापित किया जाता है। इस पर्याय से जो एकत्व का संबंध स्थापित है, वह संबंध असद्भूत है। वस्तुत: उससे हमारा संबंध ही नहीं है।

दो द्रव्यों के मध्य जो भेद है, वह पृथक्त्व है एवं एक ही द्रव्य में द्रव्य-गुण-पर्याय के मध्य जो भेद बताया जाता है, वह अन्यत्व है।

प्रवचनसार में अमृतचन्द्राचार्य ने इसे इसप्रकार परिभाषित किया हैह्न ''**विभक्तप्रदेशत्वं पृथक्त्वलक्षणम् ह्न** प्रदेशों का अलग-अलग होना पृथक्त्व का लक्षण है।'' तथा ''**अतद्भाव: अन्यत्वलक्षणम्** ह्न अतद्भाव अन्यत्व का लक्षण है। भाव की भिन्नता होना अन्यत्व का लक्षण है।''

अतद्भाव में द्रव्य-क्षेत्र और काल की भिन्नता अपेक्षित नहीं है, मात्र भाव की भिन्नता ही अपेक्षित है। जैसे ह्न ज्ञानगुण और श्रद्धागुण का द्रव्य-क्षेत्र एवं काल एक है; परंतु भाव भिन्न है। इसमें ज्ञानगुण का कार्य या भाव जानना है और दर्शनगुण का कार्य या भाव देखना है। यह अतद्भाव है।

हमारा कोई पड़ौसी है तो हम कहते हैं कि यह हमारा मुँहबोला भाई है और वह दूसरा मेरा सगा भाई है।

सगाभाई और मुँहबोले भाई में क्या फर्क है ?

जिनके माता-पिता एक हैं, भाई-बहिन एक हैं, मामा-मामी एक हैं, बुआ-फूफा एक हैं; यहाँ तक कि जिनका घर एक है, वह सगा अर्थात् सहोदर भाई है। जब ये माँ-बाप आदि सभी भिन्न-भिन्न हों, तब वह मुँहबोला/कहने का भाई है।

कहने की बहन में और सगी बहन में भी यही अंतर है। मुँह बोली (कहने की) बहन से शादी भी हो सकती है; परंतु सगी बहन से शादी की कल्पना भी संभव नहीं है।

ऐसे ही परद्रव्य के साथ हमारा जो संबंध है, वह कथनमात्र है; क्योंकि हमारा स्वरूपास्तित्व उससे पृथक् है। जिन द्रव्य-गुण-पर्यायों में परस्पर अतद्भाव होता है, उनका स्वरूपास्तित्व एक होता है। ऐसे ही जिनके स्वरूपास्तित्व एक होता है, पृथक्-पृथक् नहीं होता है; उनमें अतद्भाव होता है। जिनका स्वरूपास्तित्व भिन्न-भिन्न होता है एवं सादृश्यास्तित्व एक होता है, उनमें पृथक्त्व होता है।

दो द्रव्यों के मध्य जो भेद हैं; उसे भी भिन्नता कहा जाता है एवं द्रव्य-गुण-पर्याय के मध्य जो भेद हैं, उसे भी भिन्नता ही कहा जाता है। आत्मा व राग अन्य-अन्य हैं, आत्मा व ज्ञान अन्य-अन्य हैं एवं आत्मा व देह पृथक्-पृथक् हैं।

भिन्न शब्द का प्रयोग दोनों ही अर्थों में किया जाता रहा है। कथन में आत्मा व राग भिन्न-भिन्न हैं ह्न ऐसा भी आता है एवं आत्मा व देह भिन्न-भिन्न हैं ह्न ऐसा भी आता है।

जिनका स्वरूपास्तित्व एक है, उनके द्रव्य-गुण-पर्यायों में परस्पर अतद्भाव होता है और जिनका स्वरूपास्तित्व अलग-अलग होता है; उन द्रव्यों में परस्पर पृथक्त्व होता है।

सादृश्यास्तित्व अर्थात् महासत्ता की अपेक्षा हम सब एक हैं। इसप्रकार परपदार्थों से हमारा 'हैं' का सम्बन्ध है, अस्तित्व का संबंध है; परंतु इसमें प्रत्येक का अस्तित्व पृथक्-पृथक् है ह्न यही स्वरूपास्तित्व है। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. भारिल्ल का 2005 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 22 वीं विदेश यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	मियामी	महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833 (ऑ.)305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net	1 से 6 जून
2.	ऑरलैण्डो		7 से 12 जून
3.	डलास	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	13 से 19 जून
4.	शिकागो	निरंजन शाह 847-330-1088 डॉ. विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056 (ऑ.) 815-939-3190 (फै.) 815-939-3159	20 से 27 जून
5.	सान-फ्रांसिस्को	हिम्मत डगली (घर) 510-745-7468 अशोक सेठी (घर) 408-517-0975 E-mail : ashok_k_sethi@yahoo.com	28 जून से 4 जुलाई
6.	अटलांटा	राजू शाह (घर) 770-495-7911 मधुबेन शेठ 404-325-0627 E-mail : shethmadhu@yahoo.com	5 से 11 जुलाई
7.	वाशिंगटन	नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004 (फै.) 703-321-7744 E-mail : jainnarendra@hotmail रजनीभाई गोसालिया 301-464-5947 E-mail : bakliwalatul@hotmail.com	12 से 24 जुलाई

वैराग्य समाचार

श्री मुकेश जैन, देवलाली (इन्दौर) वालों की माताजी श्रीमती संतोष बेन धर्मपत्नी श्री डॉ. राजेश जैन का स्वर्गवास हो गया है। दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो यही मंगल भावना है ।

एक्यूप्रेशर शिविर सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित श्री रविन्द्र पाटनी फै. चै. ट्रस्ट के चिकित्सक डॉ. पीयूषजी त्रिवेदी द्वारा दि. 3 एवं 4 फरवरी, 05 को एक्यूप्रेशर शिविर में 275 रोगियों को नि:शुल्क सेवा प्रदान की गई। शिविर छोटी चौपड़ स्थित श्री सीताराम मंदिर में श्री रामानन्द महोत्सव मण्डल एवं धन्वंतरि औषधालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। डॉ. त्रिवेदी प्रतिदिन सायंकाल 3 से 6 बजे तक अपनी सेवायें श्री टोडरमल स्मारक भवन में दे रहे हैं।

पण्डित अभयकुमारजी का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी धर्म प्रचारार्थ दिनांक 27 मई से 7 अगस्त, 2005 तक अमेरिका जा रहे हैं। उनका वहाँ का कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न दिनांक 28 मई से 2 जून तक डलास, 3 जून से 8 जून ह्यूस्टन, 9 जून से 13 जून तक पिट्सबर्ग, 14 जून से 19 जून तक क्लीवलैण्ड, 20 जून से 27 जून तक वाशिंगटन, 28 जून से 4 जुलाई तक सान फ्रांसिस्को, 5 जुलाई से 11 जुलाई तक सियेटल, 12 से 18 जुलाई तक मियामी, 19 से 25 जुलाई तक शिकागो, 26 जुलाई से 7 अगस्त तक टोरन्टो । ज्ञातव्य है कि अमेरिका प्रवास के दौरान जिन स्थानों पर डॉ.भारिल्ल ठहरेंगे उन्हीं स्थानों पर पण्डित अभयकुमारजी भी ठहरेंगे। अतिरिक्त स्थानों हेतु सम्पर्क सूत्र निम्नलिखित हैं ह्न

ह्यूस्टन में भूपेश शेठ-281-261-4030, पिट्सबर्ग में शांतिलाल मोहनोट-721-325-2058, क्लीवलैंड में कुशल बैद-440-339-9519, सियेटल में प्रकाश जैन-425-881-6143, टोरंटो में रीमा अग्रवाल/संजय जैन-905-686-5245 ●

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

छिंदवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर नई आबादी गांधीगंज के प्रथम वार्षिकोत्सव पर दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में विविध धार्मिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रात: ध्वजारोहण के पश्चात् पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में बाल ब्र. संवेगी केसरीचन्दजी धवल एवं डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के निर्देशन में चतुर्गति के दुखों पर आधारित नृत्य नाटिका का मंचन किया गया। **ह्न दीपकराज जैन**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मार्च (प्रथम) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127